موضوع الخطبة: الإيمان بأسماء الله وصفاته

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/حفظه الله

لغة الترجمة: الهندية

المترجم : فيض الرحمن التيمي (@Ghiras_4T)

उपदेश का शीर्षकः

अल्लाह के नामों एवं विशेषणों पर ईमान

प्रशंसाओं के पश्चातः

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है।दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कारित बिदअ़त(नवाचार)है और प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।
ए मुसलमानो! अल्लाह का तक़वा अपनाओ और उस्से डरो उसकी आज्ञाकारी करो और उसके अवज्ञा से बचो,और जानलो कि अल्लाह के नामों और विंशेषणों पर ईमान लाने का इस्लामी आस्था में बड़ा महत्व है,अल्लाह ने अपने पवित्र पुस्तक में अपने नामों और विशषणों की बड़ी प्रशंसा की है,अल्लाह का कथन हैः

(وَكَانَ اللَّهُ سَمِيعًا بَصِيرًا)

अर्थातःअल्लाह अति सुन्ने वाला,अति देखने वाला है।

अथवा अल्लाह ने फरमायाः

(وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا)

अर्थातः अल्लाह अति छमा प्रदान करने वाला,कृपा करने वाला है।

और इस प्रकार के अनेक प्रमाण हैं।

- जैसा कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ह़दीस में अनेक स्थान पर अपने रब की प्रशंसा की है और उसके जलाल व कमाल के विशेषण का उल्लेख किया है।
- अल्लाह के नामों एवं विशेषणों पर ईमान लाने से बंदों के अंदर अल्लाह का डर उत्पन्न होता है,जिसके फलस्वरुप बंदा अल्लाह की उसी प्रकार पूजा करता है जिस्से अल्लाह प्रसन्न होता है,क्योंकि तथ्य यही है जैसा कि कहा गया है:(जो अल्लाह को अधिक जानता है वह उस्से अधिक डरता है)।

  (इसे मोह़म्मद बिन नसर अलमरवज़ी ने (ताजीमो क़ुदरतिस्सलात) :786 में अह़मद बिन आसिम अलअनताकी से रिवायत किया है।) इसी लिए अल्लाह के नामों व विशेषणों को जान्ने वाले लोग अल्लाह से अधिक डरते हैं,जैसा कि अल्लाह का कथन है:

(إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ)

अर्थातःअल्लाह से उसके वही बंदे डरते हैं जो ज्ञान रखते हैं।

- चूंकि अल्लाह के नामों एवं विशेषणों पर ईमान लाने का यह महत्व है,इस लिए बंदा पर अनिवार्य है कि वह इसी प्रकार उसे पूरा करे जिस प्रकार धर्म में आया है,और वह इस प्रकार कि अल्लाह ने अपनी पुस्तक में और पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी सुन्नत में जिन नामों और विशषणों को प्रमाणित किया है,उन्हें उसी प्रकार प्रमाणित किया जाए जैसा अल्लाह के अभिमान के याग्य है।
- ए मोमिनो! अल्लाह के नामों एवं विशेषणों पर ईमान लाने के दो तक़ाज़े हैं:जिस प्रकार वह अवतरित हुए हैं उसी प्रकार उनके जाहेरि अर्थ को समझा जाए,बेगैर किसी हैर फैर,इनकार,गुणवक्ता एवं उदाहरण के,इसका प्रमाण अल्लाह का यह कथन है:

(وَلِلَّهِ الْمَثَلُ الْأَعْلَى)

अर्थातःअल्लाह के लिए तो ही उच्च विशेषण है।
अर्थात उसके लिए संपूर्ण विशषण है,अल्लाह का कथन है:

(لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ)

अर्थातःउस जैसी कोई चीज नहीं वह सुन्ने और देखने वाला है।

अल्लाह पर ईमान लाने का दूसरा तक़ाजा यह है कि जो नाम और विशेषण क़ुरान व ह़दीस में अवतरित हूए हैं,उन पर ही बस किया जाए,और कोई ऐसा नाम एवं विशेषण न अविश्कार किया जाए जो कि क़ुरान व ह़दीस में न हो,इमाम अह़मद फरमाते हैं:अल्लाह तआ़ला ने अपनी

पवित्र हस्ती के लिए जिन विशेषणों का उल्लेख किया है,उस्से अधिक उसका विशेषण बयान नहीं किया जा सकता।

(काज़ी अबू याली ने(तबक़ातुल हनाबिला)1/386के अंतर्गत हंबल बिन इसहाक़ के जीवनी में यह कथन उल्लेख किया है)

- ए अल्लाह के बंदो! अल्लाह के नामों एवं विंशेषणों पर ईमान लाने का विपरीत यह है कि उनमें नास्तिकता किया जाए,शब्दकोश में नास्तिकता का अर्थ झुकने और माएल होने के हैं,इसी से क़बर में जो लहद होती है,उसे लहद का नाम दिया जाता है,क्योंकि वह क़बर के एक ओर झुकी होती है,इस आधार पर नामों और विशेषणों में नास्तिकता का अर्थ यह है कि उनके अर्थ एवं सार को समझने में इस सत्य समझ से बचा जाए जो अ़रबी भाषा पूर्वजों के विचार का तक़ाजा है।

नास्तिकता के अनेक प्रकार हैं,उन सब का आधार इस पर है कि या तो सत्य अर्थ को ऐसे अर्थ की ओर फेर दिया जाए जो उसका **उद्देश**न हो,या इसे पूर्ण रूप से व्यर्थ कर दिया जाए,यह दोनों ही अल्लाह के नामों एवं विशेषणों पर ईमान लाने के **विरुद्ध**हैं,यह बेगैर ज्ञान के अल्लाह की ओर किसी बात को फेरना है,उन नवाचारों में से है जिन के मानने वालों को धार्मिक पूर्वजों और उनके अनुयायियों ने कठोर खंडन किया है,और यह उन पापों में से है जिन पर अल्लाह ने यातना बताई है,अल्लाह का शरण,अल्लाह का कथन है:

(وَلِلَّهِ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى فَادْعُوهُ بِهَا وَذَرُوا الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي أَسْمَائِهِ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ)

अर्थातः अच्छे अच्छे नाम अल्लाह के लिए हैं इसलिए उन नामों से केवल अल्लाह ही को पुकारा करो और ऐसे लोगों से संबंध भी न रखो जो उसके नामों का खंडन करते हैं,उन लोगों को इनके लिए अवश्य यातना मिलेगी।

(وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ إِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولَئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا)

अर्थातःजिस बात का तुझे पता न हो उसके पीछे मत पड़ो,क्योंकि कान और आंख और दिल उनमें से प्रत्येक से पूछताछ की जाने वाली है।

ए मुसलमानो! अल्लाह के नामों और विशषणों में नास्तिकता का सबसे प्रसिद्ध प्रकार यह है कि उनमें हेरफेर किया जाए,अर्थात उनके अर्थ को उन वास्तव अर्थों से फेर दिया जाए जिनका तक़ाजा अ़रबी भाषा और सलफे सालेहीन(धार्मिक पूर्वजों)की समझ करती है,जैसे सह़ाबा और नेकनीयती के साथ उनके अनुयायियों,जिन्हों ने पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से समझ प्राप्त की,उनकी समझ का क्या कहना,खुद पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी अच्छाई

की गवाही दी है,आप पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ह़दीस हैः''सबसे अच्छे और बेहतर लोग हमारे युग के लोग हैं,फिर वे लोग हैं जो उनके बाद के होंगे,फिर वे लोग जो उनके बाद के होंगे''

(इसे बोखारी 2652 और मुस्लिम 2533 ने अबदुल्लाह बिन**मसऊद**रज़िअल्लाहु अनहु से रिवायत किया है।)

हर वह बात जो सह़ाबा की समझ के **विरुद्ध**हो उसका इसलाम धर्म से कोई संबंध नहीं,बल्कि वह धर्म में अविश्कारित मनघड़त तरिक़ा है,इसलाम से उसका कोई संबंध नहीं।

- अल्लाह के नामों व विशेषणों में हेरफेर का एक उदाहरण यह है कि अ़रश पर अल्लाह के मुस्तवी होने की तफसीर यह कीजाए कि वह उस पर हावी व प्रभावित है,और इसका इनकार किया जाए कि उसका अर्थ अल्लाह का अ़रश पर बोलंद होना है,अल्लाह तआ़ला उच्च व महान है।
- अल्लाह के नामों एवं विशेषणों में नास्तिकता का एक प्रकार यह है कि उनमें तकयीफ(कैफियत बयान कया जाए),अर्थात अल्लाह के किसी विशेषण की तकयीफ व माहियत मालूम किया जाए,जो कि ह़राम है,इस लिए कि अल्लाह ने इस बात का इनकार किया है कि उसके बंदे उसके किसी गुण को सिमित करें,अल्लाह का कथन हैः

(وَلَا يُحِيطُونَ بِهِ عِلْمًا)

अर्थातःजीवों का ज्ञान उस पर हावी नहीं हो सकता।

इस आयत में अल्लाह ने इस बात का कठिन शब्दों में खंडन किया है कि उसके गुणों,कैफियत व प्रकृति जान्ने की चाहत रखी जाए।

सलफे सालेहीन (धार्मिक पुर्वजों)ने उस व्यक्ति को कठोर नकारा है जो इस ज्ञान को प्राप्त करना चाहता है,एक व्यक्ति इमाम मालिक बिन अनस रह़िमहुल्लाह के पास आया और पूछाःए अबू अबदुल्लाह! रह़मान अ़रश पर मुस्तवी (स्थिर) है,वह कैसे मुस्तवी है?

रावी कहते हैंःइमाम मालिक ने सर झुका लिया यहां तक कि पसिने में डूब गये,फिर फरमायाः"इस्तेवा का अर्थ प्रसिद्ध है,इसकी कैफियत मनुष्य के बुद्धि से परे है,उसपर ईमान लाना अनिवार्य है,उसके प्रति प्रश्न करना नवाचार है,मुझे तो तुम बिदअ़ति लगते हो"और आप ने उन्हें बाहर निकालने का आदेश दिया।

(इसे बैहक़ी ने "अलअसमा व अलसिफात":866.867 में रिवायत किया है।)

- इब्ने ओसैमीन रह़िमहुल्लाह ने इमाम मालिक के कथन पर टिप्पनी करते हुए जो बात कही है उसका सार यह है किःमालिक का कथन समस्त गुणों कासंतुलन है,जो लोग अल्लाह के गुणों की कैफियत के बारे में प्रश्न करते हैं,उनका प्रश्न करना नवाचार है,क्योंकि सह़ाबा अच्छाई और अल्लाह के जिन गुणों को प्रमानित करना अनिवार्य है,उनका ज्ञान प्राप्त करने के सबसे अधिक जिज्ञासी थे,इसके बावजूद कभी भी उन्हों ने अल्लाह तआ़ला के किसी विशेषण के बारे में प्रशण नहीं किया''। आप का कथन समाप्त हुआ।
- अल्लाह के नामों एवं विशषणों में नास्तिकता का एक प्रकार तशबीह (समानता)देना है,अल्लाह तआ़ला अपने बंदों की समानता से उच्च है।

नईम बिन ह़माद अलखेजाई रहिमहुल्लाह.जो बोखारि के शिक्षक हैं वह कहते हैंःजिसने अल्लाह को उसके जीव से समानता दिया वह काफिर है,जिसने उनके गुणों का इनकार किया जिनका उल्लेख अल्लाह ने अपने प्रति किया है तो वह भी काफिर है,अल्लाह और उसके रसूल ने अल्लाह के जिन गुणों का उल्लेख किया है,उनमें कोई समानता नहीं पाई जाता। (अलओलूमःः464)

- ए मोमिनों! अल्लाह के नामों एवं विशेषणों को बेगैर किसी तह़रीफ(हेरफेर)के उसी प्रकार समझना जैसे वह अवतरित हुऐ हैं,उन आसथाओं में से है जिन पर चारों पंथों आदि की आम सहमति है,इमाम अह़मद बिन ह़सन अलशैबानी.जो कि इमाम अबू ह़नीफा के क्षात्र हैं.का कथन हैःपूर्व से लेकर पश्चिम तक के समस्त विधिवेत्ताओं का इस बात पर सहमति है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से विश्वसनीय वर्णनकर्ताओं के माध्यम से जो क़ोरान व अह़ादीस हम तक पहुंची हैं,उन में अल्लाह तआ़ला के जो विशेषण हैं,उन पर बेगैर किसी तफसीर,तौसीफ और तशबीह के ईमान लाना अनिवार्य है,जिस ने उनमें से किसी का मनचाही व्याख्या की वो पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मार्ग इसलाम से बाहर है,क्योंकि उन्हों ने उन विशषणों की मनचाही व्याख्या नहीं की है,बल्कि क़ोरान व ह़दीस में जो कुछ आया है, उन

पर ही बस किया और उसके पश्चात खामोशी अपनाई है। (अलकालकाई की पुस्तक"शरहो उसूले एतेक़ादे अहलुस सुन्नत व अलजमाअत" :3/480)

- ईमाम शाफेई रहि़महुल्लाह का कथन है:में अल्लाह पर उसकी मुराद के अनुसार और पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उनके मुराद के अनुसार ईमान लाता हूं।(इस कथन को अबदुल्लाह बिन अह़मद बिन क़ोदामा(620)ने अपनी पुस्तक "ज़मु अलतावील"पृष्ठ संख्या(:222. 256) में उल्लेख किया है।)

इब्ने तैमिया रहिमहुल्लाह फरमाते हैं:कुरान में अल्लाह के विशेषणों पर आधारित जितनी भी आयते हैं,उन की व्याख्या में सह़ाबा के बीच कोई विरोध नहीं पाया जाता है,में ने सह़ाबा से वर्णित समस्त व्याख्याओं और ह़दीसों का अध्ययन किया,इस विषय में छोटी बड़ी सो से अधिक व्याख्याओं का मेंने अल्लाह की इच्छा से समीक्षा किया,मेंने अब तक किसी सह़ाबी के बारे में यह नहीं पाया कि उन्हों ने अल्लाह के विशषणों पर आधारित किसी भी आयत अथवा ह़दीस की ऐसी व्याख्या की हो जो उसके प्रसिद्ध अर्थ और तक़ाजे के **विरुद्ध**हो,बल्कि उन आयात व अह़ादीस में वर्णित विशेषणों को सिद्ध करने में उनसे अनेक कथन वर्णित हैं जिन से व्याख्या करने वालों का विरोध और खंडन होता है।("मजमूउलफतावा":6/394)आप रहि़महुल्लाह का कथन समाप्त हुआ।

- इब्ने कसीर रह़ीमहुल्लाह अल्लाह तआ़ला के कथन

(ثُمَّ اسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ)

की व्याख्या में लिखते हैं:रही बात अल्लाह तआ़ला के फरमानः (ثُمَّ اسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ)की तो इस विषय में लोगों के एतने कथन हैं कि इस स्थान पर उन्का उल्लेख नहीं किया जा सकता,बल्कि इस स्थान पर सलफे सालेह़ी (नधारिर्मक पुर्वजों) का मार्ग अपनाया जाए,जैसे मालिक,औजाई,सौरी,लैस बिन साद,शाफेई,अह़मद,इसहाक़ बिन राहवैय और उन जैसे दिगर नए व पुराने इमामों का मार्ग,वह मार्ग यह है कि उन नामों व विशषणों को उसी प्रकार प्रमाणित किया जाए जिस प्रकार वे आए हैं,उनमें कोई तकयीफ,समानता और इनकार न किया जा जाए,उन नामों व विशेषणों का जो जाहेरी अर्थ समानता बताने वालों के दिल में आता है,वह अल्लाह से

उस अर्थ का नकीर करते हैं,कोई भी जीव अल्लाह के जैसा नहीं हो सकताः

(لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ)

अर्थातःउस जैसी कोई चीज नहीं वह सुन्ने और देखने वाला है।
बल्कि सत्य वह है जिस का वर्णन इमामों ने की है जिन में इमाम बाखारी के शिक्षक नईम बिन ह़म्माद बिन अलखोज़ाइ भी हैं, वह कहते हैं:"जिस ने अल्लाह को जीव से समानता दी उसने कुफर किया,जिसने किसी विशेषण का इनकार किया जिस्से अल्लाह ने खुद को संबेधित किया है,उसने कुफर किया है,अल्लाह और रसूलुल्लाह ने जिन विशेषणों को अल्लाह के लिए प्रमाणित किया है,उनमें कोई समानता नहीं पाई जाती",तो जो व्यक्ति अल्लाह तआ़ला के लिए उन विशेषणों को जो स्पष्ट आयतों और ह़दीसों में आई हैं,उसी प्रकार प्रमाणित करे जो उसकी महानता के याग्य है,तथा अल्लाह तआ़ला से प्रत्येक प्रकार के दोषों एवं अवगुणों का खंडन करे तो वह सत्य मार्ग पर है।आप रह़िमहुल्लाह का कथन समाप्त हुआ।

- अबदुर्रह़मान बिन अलक़ासिम रह़िमहुल्लाह(आप इमाम अबदुर्रह़मान बिन अलक़ासिम हैं,उनके बारे में इमाम ज़हबी ने "तारीखुल इसलाम":4/1149 में लिखा हैःवह बड़े विद्धानों में से हैं,और इमाम मालिक के उन महान छात्रों में से हैं जिन्हों ने उनके पंथ को बढ़ावा दिया.... उनका निधन 191 हिजरी में हूआ।) फरमाते हैंःकिसी मनुष्य के लिए यह उचित नहीं कि वह किसी एसे गुन को अल्लाह से जोड़े जिस्से अल्लाह ने अपनी हस्ती को कुरान में उल्लख नहीं किया है,और न उसके हाथों को किसी चीज से समानता दे,बल्कि यह कहे किः"उसके दो हाथ हैं,जैसा कि कुरान में उसने अपनी हस्ती के गुन बताए हैं,और उसका एक चेहरा है जैसा कि उसने अपना यह गुन बयान किया है"।अल्लाह ने कुरान में अपने जो विशेषण बयान किये हैं,उन पर ही बस करे,क्योंकि कोई अल्लाह तआ़ला के सामान नहीं,बल्कि वह अल्लाह है जिसके सेवा कोई सत्य परमेश्वर नहीं,जैसा कि उसने अपना यह गुन बयान किया

है,उसके दोनों हाथ खुले हुए हैं,जैसा कि अल्लाह ने अपने हाथों का गुन बयान किया है और यह भी गुन बयान किया है किः

(وَالْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَالسَّمَاوَاتُ مَطْوِيَّاتٌ بِيَمِينِهِ)

अर्थातः सारी धरती क़ेयामत के दिन उसकी मुठठी में होगी और सारे आकाश उसके दाहने हाथ में लिपटे हुए होंगे।

आप रहि़महुल्लाह का कथन समाप्त हूआ।("ओसूलुस्सुन्न":42,अनुसंधानःअहमद बिन अ़ली अलक़ोफैली,प्रकाशकःदारुलफुरक़ान,मिस्त्र)

अल्लाह तआ़ला कुरान की बरकतों से हमें और आप को लाभ पहुंचाए,मुझे और आप को उसकी आयतों और हि़कमतों पर आधारित प्रामर्शों ले लाभ पहुंचाए,में अपनी यह बात हकते हुए अल्लाह तआ़ला से आप सब के लिए समस्त प्रकार के पापों से छमा प्राप्त करता हूं,आप भी उस्से छमा प्राप्त करे,निसंदेह वह अति तौबा स्वीकारने वाला और छमा प्रदान करने वाला है।

द्वितीय उपदेशः

الحمدلله وكفى، وسلام على عباد ه الذين اصطفى، أما بعد:

ए मुसलमानो!मनुष्य की बुद्धि,**ह्रदय**और उसके शरीर के अंगों के लिए अल्लाह तआ़ला के नामों व विशेषणों के अर्थ को जानने के अनेक लाभ हैं,**इब्नुलकय्यूम**

रहि़महुल्लाह लिखते हैंः(अल्लाह तआ़ला के)सुंदर नामों और उच्च गुनों,पूजा पाठ एवं जीवन के मामलों पर इन्हीं प्रभावों का तक़ाजा करते हैं, जो प्रभाव रचना एवं निर्मान पर लागू होते हैं,प्रत्येक विशेषण की एक विशेष बंदगी है,जिस्से यह अनिवार्य होता है कि उसको जाना जाए और उसका ज्ञान प्राप्त किया जाए,और यह चीज**ह्रदय**

और शरीर के भागों एवं अंगों से पूरी की जाने वाली पूजा के समस्त प्रकारों में समान है,इसलिए बंदा यह जानले कि अल्लाह तआ़ला लाभ व हानी,प्रदान व वंचन,रचना व

रिज्क़,जीवन और मृत्यु देने में अकेला है,उसको जानने का यह लाभ यह होता है कि उसके आंतरिक में अल्लाह पर विश्वास करने का जज़बा पैदा होता है और जाहिर में तवक्कुल(विश्वास) के आव भाव एवं परिणाम जाहिर होते हैं।
बंदा का अल्लाह तआ़ला के देखने व सुन्ने और ज्ञान का अवज्ञत होना और यह जान लेना कि आकाशों एवं धर्ती में राई के दाने के बराबर भी कोई चीज उससे छुपी नहीं,वह समस्त छुपी और खुली चीजों को जानता है,वह आंखों कि ख्यानत और दिल के भेद से अवज्ञत है,इसको जानने का लाभ यह होता है कि बंदा अपने जीभ,शरीर के अंगों और हृदय के ख्यालात को ऐसी बातों से सुरक्षित रखता है जो अल्लाह को पसंद नहीं,तथा उन अंगों को ऐसे कामों में लगा के रखता है जो अल्लाह को पसंद हैं,इसका लाभ यह होता है कि उसके आंतरिक में ह़या पैदा होती है,और यह ह़या उसे ह़राम और बुरे कामों से दूर रखता है।

इसी प्रकार बंदा का अल्लाह की महानता और प्रतिष्ठा से अवज्ञत होना,उसके अंदर विनर्मता एवं प्रेम को जन्म देता है और जाहेरि प्रार्थना के एसे प्रकारों से उनके जीवन को भर देता है जो अल्लाह के ज्ञान से ही **उत्पन्न** होती है।इसी प्रकार बंदा का अल्लाह के संपुर्ण एवं उच्च गुनों से अवज्ञत होना उसके अंदर ऐसा प्रेम पैदा करता है जो प्रार्थना के साथ खास होती है।
इसी प्रकार समस्त प्रकार की पूजा पाठ नामों एवं विशेषणों के तक़ाजों के ओर ही लोटती हैं और उनसे उसी प्रकार संबंध रखती हैं जिस प्रकार जीव उनसे संबंधित हैं,अल्लाह तआ़ला का पैदा करना और(प्रत्येक प्रकार का)आदेश देना इस संसार में उसके नामों व विशेषणों के लवाजेमात,प्रभाव और तक़ाजे हैं।("मिफताहो दारिस्सआ़दा":2/510.511)आप रह़िमहुल्लह का कथन समाप्त हूआ।

- तथा यह भी जान लें.अल्लाह आप पर कृपा करे.कि अल्लाह तआ़ला ने आप को एक बड़ी चीज का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

(إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا)

अर्थातःअल्लाह तआ़ला और उसके देवदूत उस नबी पर रह़मत भेजते हैं,ए ईमान वालो!तुम भी उन पर दरूद भेजो और अधिक सलाम भी भेजते रहा करो।

ए अल्लाह! तू अपने दास एवं संदेशवाहक मोह़म्माद पर रह़मत एवं शांति भेज,तू उनके उत्तराधिकारियों,अनुयाईयों और क़ेयामत तक नेकनीयती के साथ उनका अनुगमन करने वालों से प्रसन्न होजा।

ए अल्लाह! प्रत्येक कठिनाई पापों के कारण अवतरित होती है और तौबा के माध्यम से ही दूर होती है,हम पापों को स्वीकारते हुए तेरे द्वार में अपने हाथ फैलाए हुए हैं,हमारे सर तौबा के साथ तेरे द्वार पे झुके हूए हैं।

ए अल्लाह!यमन,इराक़,सीरया,फलसतीन और लीबिया और दूसरे इसलामी देशों में शांति फैला दे।

ए हमारे रब!हमें दुनिया मे पुण्य दे और आखिरत में भलाई प्रदान कर,और नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين

लेखक:

मजिद बिन सुलेमान अलरसी

२१रजब **१४४२**ह़िजरी

जूबैल,**सऊदी**अ़रब

अनुवादः

फैजुर रह़मान ह़िफजुर रह़मान तैमी